



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-13062020-219928
CG-DL-E-13062020-219928

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1671]
No. 1671]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 12, 2020/ ज्येष्ठ 22, 1942
NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 12, 2020/ JYAISHTHA 22, 1942

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 जून, 2020

का.आ. 1874(अ).—अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य श्रीनगर शहर के दक्षिण में लगभग 70 किलोमीटर में उत्तर अक्षांश 33°30' एवं 33°42' और पूर्व देशांतर 74°33' एवं 74°43' के बीच स्थित है। हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य का नाम हिरपोरा ग्राम से लिया गया है, एक छोटा उप ग्राम जो संरक्षित क्षेत्र के उत्तर पूर्वी बाहर की तरफ स्थित है और यह इसका प्रवेशद्वार बनाता है। अभयारण्य पीर पंजल पर्वत के तरंग में भू-भाग में फैला हुआ है, जिसमें लगभग 341.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल है। अभयारण्य 12 किलोमीटर दूरी में जिला मुख्यालय के साथ कश्मीर घाटी के शूपियां जिला के अंतर्गत आता है। निकटतम एयरपोर्ट, श्रीनगर 70 किलोमीटर में है और निकटतम रेलहेड, ककपोरा 40 किलोमीटर में है;

और, अभयारण्य सरकारी अधिसूचना संख्या एफएसटी/वन्यजीव/अभयारण्य/हिरपोरा/87 (एसआरओ-153), दिनांक 19 मार्च, 1987 के माध्यम अस्तित्व में आया। जबकि जम्मू और कश्मीर सरकार द्वारा वन्यजीव संरक्षण विभाग के संगठनात्मक स्वरूप की स्थापना को तैयार करते हुए उसके 1991 के आदेश संख्या 128-एफ.एस.टी दिनांक 13 मई, 1991 के माध्यम से पुनः हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य की स्थापना अधिसूचित की गई। बाद में, सरकार ने एसआरओ 424, के अधीन जारी अधिसूचना और संख्या एफएसटी/वन्यजीव/71/2007, दिनांक 18 दिसम्बर, 2007 के अधीन पृष्ठांकन के माध्यम से, अभयारण्य का क्षेत्रफल 341.25 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ाया;

और, हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य में सम्मिलित पर्वत श्रेणी पीरपंजल श्रेणी का भाग है। स्थलाकृति चट्टानी चट्टानों द्वारा टूटी हुई ढाल के लिए मध्यम से ढलान के साथ पहाड़ी है। पश्चिमी और दक्षिणी भाग खड़े हैं जबकि पूर्वी पर्वत श्रेणी मध्य से अधिक ढलान वाली है। जलमार्ग और कई छोटी पहाड़ी अपवाहिका या नाली द्वारा तरंगमय, आर-पार भू-भाग है। समुद्रतल से ऊपर ऊंचाई 2557 से 4745 मीटर तक विस्तृत है;

और, हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पति के विभिन्न प्रकार हैं जो विभिन्न भौतिक और जैविक कारकों जैसे ऊंचाई, पहलू, वास स्थिति और सभी जैविक अंतःक्षेप (इंटरफेयरेंस) के प्रभाव और नियंत्रण के अधीन निर्मित हैं। नदी जोन (2300 मीटर से नीचे) में प्रमुख वृहत-पत्ते पौधे प्रजातियां *एस्कलुस इंडिका* और *जगलैस रेगिया* संबंधित *मॉरुस अल्बा*, *राबिनिया स्प्रुडोसेकिया*, *रहस स्प्रुकेडेनिया*, *केल्टिस ऑस्ट्रालिस*, *उलमस विलोसा*, *पापुलस सिलियाटा*, *सैलक्स कैप्रिया*, आदि हैं। प्रमुख झाड़ियां *विबर्नम कॉन्टिफोलियम*, *बर्बेरिस लिसेयुम*, *पैरोटीओपिस जेकमोटियाना*, *सोरबारिया टोमेंटोसा*, आदि हैं। स्लीवर देवदार और ब्लू पाइन वनों की प्रमुख उप-अल्पाइन (2300मीटर-3000मीटर) वनस्पति है। प्रमुख प्रजातियों जिसमें *पिनस ग्रिफिथी* संबंधित *रोजा ब्रूनोनी*, *एबिस पिंड्रो*, *बेतुला यूटिलिस*, *पिका स्मिथियाना* और *उल्मस वालिसियाना*, आदि शामिल हैं। अन्य प्रमुख झाड़ी प्रजातियों में *इंडिगोफेरा हेटेरांथा*, *टैक्सेस वैलिसियाना*, और *इसोडो रुगोसस*, आदि शामिल हैं। ब्रिच द्वारा प्रमुख अल्पाइन झाड़ी *बेटुलौटिलिस* संबंधित *होडोडेंड्रोन कॉम्पैनुलैटम* और *जुनीपेरस एसपीपी* और प्रमुख अल्पाइन चारागाह *फ्रिटिलैरिया एसपीपी* और *पॉलीगोनम एसपीपी* आदि है। ब्रिच द्वारा प्रमुख अल्पाइन (3000-3500मीटर) वनस्पति *बेटुला यूटिलिस* संबंधित *होडोडेंड्रोन कॉम्पैनुलैटम* एवं *जुनीपेरस एसपीपी* और प्रमुख अल्पाइन चारागाह *फ्रिटिलैरिया एसपीपी* एवं *पॉलीगोनम एसपीपी* हैं। डिकोटायलेडोनोअस जड़ी-बूटियों जैसे *रुमेक्स पैटिएंटिया*, *कोरिडैलिस एसपीपी*, *प्रीमुला एसपीपी*, *पेडीकुलैरिस एसपीपी*, *एनेमोले एसपीपी* आदि के अंतर्गत भूमि आच्छादित है। छोटी सदाबहार झाड़ियों द्वारा प्रमुख चट्टान अग्र-भाग (3500मीटर से ऊपर) चट्टानी खड़ी चट्टान और ऊपरी पहाड़ी है जिसमें *जुनीपेरस रेकुरवा*, *होडोडेंड्रोन एन्थोपोगोन* आदि संबंधित जड़ी-बूटी *स्टैचिस सेरीसिया*, *ग्युम इलाटम* और *वेरोनिका मेलिसाफोलिया* आदि शामिल हैं;

और, हिरपोरा वन अच्छे औषधीय मूल्य के अनेक पौधे प्रजातियों के साथ भी समृद्ध हैं। क्षेत्र में उगने वाले कुछ औषधीय पौधों में *एकोनिटम हेट्रोफिलम*, *अर्नबिया बेंथामी*, *आर्टेमिसिया एबसीथियम*, *बर्बेरिस लिसेयुम*, *बर्गेनिया सिलियाटा*, *धतूरा स्ट्रैमोनियम*, *डायोस्कोरिया डेल्टोइडिया*, *लवटेरा कैशमेरियाना*, *सोसुरिया कोस्टस* और *टैक्सस वालिसियाना* शामिल हैं;

और, हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य व्यापक वनस्पतिक आच्छादित करता है जो कि स्तनधारियों और अन्य जीवजंतु प्रजातियों को आदर्श वास प्रदान करता है। अभयारण्य से प्रमुख स्तनधारी कश्मीर माखौर, (*कैपरा फाल्कोनेरी*),

हिमालयन कस्तूरी मृग (*माँस्कस क्यूप्रियस*), एशियाई काला भालू (*उर्सस थिबेटनस*), हिमालयन भूरा भालू (*उर्सस आर्कटोस*), सामान्य तेंदुआ (*पेंथेरा पार्डस*), सामान्य लंगूर (*सेमोपिथेकस एंटेल्स*), रीसस मकाक (*मकाका मुलाटा*), तेंदुआ बिल्ली (*प्रियोनेलुरुस बेंगालेंसिस*), जंगल बिल्ली (*फेलिस चाउस*), पीला-श्रोटेड मार्टेन, (*मार्टेस फ्लैविगुला*), हिमालयन पाम सिवेट (*पगुमा लारवाता*), तिब्बती भेड़िया (*कैनिस हिमालायेसिस*), आदि अभिलिखित किए गए हैं;

और, हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य कई प्रवासी और आवासीय पक्षियों जिसमें गिद्ध, रैपटोरस और गौरैया की प्रजातियां शामिल हैं के लिए वास है। अभयारण्य में प्रमुख प्रजातियां ब्लैक इयर्ड काइट (*मिल्वस माइग्रेंस*), हिमालयन ग्रिफन गिद्ध (*जिप्स हेमालायन्सिस*), इजिप्टियन गिद्ध (*निओप्रॉन पर्कनोप्टेरस*), बियर्डेड गिद्ध (*जिपटस बारबेटस*), यूरोशियन ग्रिफॉन (*जिप्स फुल्वस*), मोनल तीतर (*लोफोफोरस इमपेजैनस*), हिमालयन स्नो कॉक (*टेट्रागैलस हिमालयांसिस*), चुकर पार्ट्रिज (*अलेक्टोरिस चाकुर*), कोक्लास तीतर (*पुकारसिया मैक्रोलोफा*), ब्लू रॉक कबूतर (*कोलंबा लिविया*), ओरिएंटल कल्लुआ कबूतर (*स्ट्रेप्टोपेलिया ओरिएंटालिस*), यूरोशियन कॉलारड डव (*एस. डिकोटा*), यूरोशियन कोयल (*कुकुलूस कैनरस टेलीफोन*), अल्पाइन स्विफ्ट (*एप्स मेल्बा मेल्बा*) यूरोपियन रोलर (*क्रोसियासगैसरुलूस सेमेनवी*), कॉमन हूपो (*अपोपा एपोप्स एपोप्स*), कश्मीर फ्लाइकेचर (*फिक्की सुबुबरा*), स्ट्रीकड लार्फिंग थ्रश (*ट्रोक्रालोप्टेरम लिनैक्टम*), रॉक बंटिंग (*एम्बरिजा सिया*), आदि पाए जाते हैं;

और, अभयारण्य में कुछ दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटापन्न प्रजातियों जैसे मारखोर (संकटापन्न के निकट), कश्मीर कस्तूरी मृग (लुप्तप्राय), सामान्य तेंदुआ (वलनेरेबल), हिमालयन ग्रिफन गिद्ध (संकटापन्न के निकट), बियरडेड गिद्ध (संकटापन्न के निकट), कश्मीर फ्लाइकेचर (वलनेरेबल) के लिए भी वास प्रदान करता है। अतः, अभयारण्य पारिस्थितिकी और जैव विविधता दृष्टिकोण से समृद्ध हैं;

और, हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैरा 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इसमें इसके पश्चात् पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जम्मू और कश्मीर राज्य के शुपियां जिले के हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0 (शून्य) से 1.0 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी-संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

- पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमा.**-(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0 (शून्य) से 1.0 किलोमीटर तक होगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 44.90 वर्ग किलोमीटर है। विभिन्न दिशा में पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार नीचे दिया गया है:

दिशा	विस्तार (किलोमीटर)
उत्तर	01
उत्तर-पूर्व	00
पूर्व	01
दक्षिण-पूर्व	01
दक्षिण	00

दक्षिण-पश्चिम	00
पश्चिम	0.03
उत्तर-पश्चिम	01

पारिस्थितिकी संवेदी जोन के शून्य विस्तार का औचित्य: हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य कश्मीर प्रांत के प्रशासनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आता है और जम्मू प्रांत में राजौरी वन संभाग के अंतर्गत और उसी प्रांत के अंतर्गत, शुपियां वन संभाग के क्षेत्रीय वनों से घिरा हुआ है। शुपियां वन संभाग में हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर प्रस्तावित पारिस्थितिकी संवेदी जोन पहचाना गया है जो कि 0 से 1000 मीटर तक विस्तृत है और यहां संलग्न मानचित्र में दर्शाया गया है। हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन को उत्तर-पूर्वी (हिरपोरा ग्राम) सीमा की ओर शून्य रखा गया है, हिरपोरा ग्राम के सीमांत के अंतर्गत क्षेत्र में फैला हुआ है और अंतर-प्रांतीय (जम्मू प्रांत और कश्मीर प्रांत) सीमा को छूता है।

- (2) हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का वर्णन **उपाबंध-I** के रूप में संलग्न है।
- (3) सीमा विवरण और अधांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन का सीमांकन करते हुए हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **उपाबंध- IIक, उपाबंध- IIख, उपाबंध- IIग और उपाबंध- IIघ** के रूप में संलग्न है।
- (4) पारिस्थितिकी संवेदी जोन और हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **उपाबंध-III** की सारणी **क** और सारणी **ख** में दी गई है।
- (5) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत कोई ग्राम नहीं है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना.- (1) राज्य सरकार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए, संघ क्षेत्र के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना बनायेगी।

- (2) संघ शासित सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों, यदि कोई हों, के अनुसार बनायी जाएगी।

- (3) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे संघ सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जाएगा:-

- (i) पर्यावरण;
- (ii) वन और वन्यजीव;
- (iii) कृषि;
- (iv) राजस्व;
- (v) शहरी विकास;
- (vi) पर्यटन;
- (vii) ग्रामीण विकास;
- (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;

- (ix) प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड;
 - (x) नगरपालिका;
 - (xi) पंचायती राज; और
 - (xii) लोक निर्माण विभाग।
- (4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।
- (5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नदी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।
- (6) आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का सहायक मानचित्र के साथ निर्धारण किया जाएगा और विद्यमान भू-उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा भी सहायक मानचित्र द्वारा दिया जाएगा।
- (7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा और पैरा 4 की सारणी में यथासूचीबद्ध प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।
- (8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।
- (9) अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।
- 3. संघ शासित सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.-** संघ राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-
- (1) **भू-उपयोग.-** (क) पारिस्थितिकी-संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, निगरानी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा:-

- (i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का संनिर्माण करना;
- (ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;
- (iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;
- (iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार, स्थानीय सुविधाएं तथा गृह वास; और
- (v) पैराग्राफ 4 में उल्लिखित बढावा दिए गए क्रियाकलाप;

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, निगरानी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, संघ राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा।

(ख) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत.**- आंचलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक जल स्रोतों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और संघ राज्य सरकार द्वारा जल आवाह प्रबंधन योजना इस रीति से बनाई जाएगी कि उसमें आवाह क्षेत्रों में विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध और निर्बंधित किया गया हो।

(3) **पर्यटन अथवा पारिस्थितिकी पर्यटन.**-(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुज्ञात होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना संघ राज्य सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से पर्यटन के संघ शासित विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के आधार पर तैयार की जायेगी।

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे, अर्थात् :-

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

तथापि, पारिस्थितिकी-पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से 1 किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुज्ञात होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा निगरानी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल/रिसोर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं होगा।

- (4) **प्राकृतिक विरासत.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएं, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।
- (5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।
- (6) **ध्वनि प्रदूषण.**— पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी-संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण के लिए विनियमों को क्रियान्वित किया जाएगा।
- (7) **वायु प्रदूषण.**— पारिस्थितिकी-संवेदी जोन में वायु प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) के उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों और उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार किया जाएगा।
- (8) **बहिस्त्राव का निस्सारण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्त्राव का निस्सारण पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण के लिए साधारण मानकों या संघ राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों जो भी अधिक कठोर हो के उपबंधों के अनुसार होगा।
- (9) **ठोस अपशिष्ट.**— ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-
- (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा; अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;
- (ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन (ईएसएम) अनुज्ञात किया जायेगा।
- (10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**— जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-
- (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।
- (ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जायेगा।
- (11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।
- (12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

- (13) **ई-अपशिष्ट.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।
- (14) **सड़क-यातायात.-** सड़क-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे। आंचलिक महायोजना के तैयार होने और संघ राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, निगरानी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क-यातायात के अनुपालन की निगरानी करेगी।
- (15) **वाहन जनित प्रदूषण.-** वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा। स्वच्छतर ईंधन के प्रयोग के प्रयास किए जाएंगे।
- (16) **औद्योगिक ईकाइयां.-** (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी।
- (ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुज्ञात होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।
- (17) **पहाड़ी ढलानों का संरक्षण.-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-
- (क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;
- (ख) जिन ढलानों या विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।
- 4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों और जिसमें तटीय विनियमन जोन अधिसूचना, 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 शामिल हैं सहित वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) जैसे अन्य लागू नियमों तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

सारणी

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और क्रशिंग इकाइयां।	(क) सभी नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर उत्खनन और तोड़ने की इकाइयों को व्यक्तिगत उपभोग के लिए घरों के सन्ननिर्माण या मरम्मत के लिए और भूमि को खोदने या घरों या अन्य क्रियाकलापों के लिए देसी टाइल्स या ईंटों के निर्माण के प्रतिनिर्देश से स्थानीय निवासियों के वास्तविक घरेलू आवश्यकताओं के सिवाए प्रतिषिद्ध किया जाएगा;

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
		(ख) खनन संक्रियाएं, माननीय उच्चतम न्यायालय के 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडाबर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सी) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में प्रचालित होंगी।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी: जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिस्त्रावों का निस्सारण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
8.	प्लास्टिक के थैलों का उपयोग।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
9.	जलावन लकड़ी का वाणिज्यिक उपयोग।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे।
ख. विनियमित क्रियाकलाप		
10.	होटलों और रिजॉर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण को छोड़कर संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी: परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार अनुज्ञात होगी।

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
11.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	<p>(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से 1 किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी भी नये वाणिज्यिक संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी:</p> <p>परन्तु, स्थानीय लोगों को अपनी आवास सम्बन्धी निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, पैरा 3 के उप पैरा (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित अपने प्रयोग के लिए, अपनी भूमि में भवन उप-विधियों के अनुसार, संनिर्माण करने की अनुज्ञा होगी।</p> <p>परन्तु गैर-प्रदूषणकारी लघु उद्योगों से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से विनियमित किए जाएंगे और वे न्यूनतम होंगे।</p> <p>(ख) एक किलोमीटर क्षेत्र से आगे ये आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे।</p>
12.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागबानी या कृषि आधारित उद्योग, जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाते हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
13.	ध्वनि और यानिय प्रदूषण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
14.	वृक्षों की कटाई।	<p>(क) संघ राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी।</p> <p>(ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित संघ राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।</p>
15.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
16.	विद्युत और संचार टावर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा (भूमिगत केबल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा)।
17.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों, नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
18.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों, नियम और विनियमन और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
19.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
	पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	
20.	पहाड़ी ढालों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
21.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
22.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होंगे।
23.	फर्मों, कारपोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के सिवाय लागू विधियों के अनुसार विनियमित (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होगा।
24.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सारण।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह के निस्सारण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सारण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
25.	सतह और भूजल का वाणिज्यिक निष्कर्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
26.	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
27.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
28.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
29.	वाणिज्यिक साइन बोर्ड और होर्डिंग्स।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
ग.संवर्धित क्रियाकलाप		
30.	वर्षा जल संचय।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग, आदि।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	कृषि वानिकी।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	बागवानी और वनौषधियों का रोपण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
37.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	कौशल विकास।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
40.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

5. पारिस्थितिकी संवेदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति.- प्रभावी निगरानी के लिए प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) द्वारा, एक निगरानी समिति का इस अधिसूचना के अंतर्गत गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात् :-

क्र. सं.	निगरानी समिति का गठन	पद
(i)	कलेक्टर या उपायुक्त, शुपियां	अध्यक्ष, पदेन;
(ii)	एक वर्ष की अवधि के लिए जम्मू और कश्मीर सरकार द्वारा पारिस्थितिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ को नामित किया जाना है	सदस्य;
(iii)	केंद्र शासित प्रदेश सरकार द्वारा नामित वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
(iv)	क्षेत्रीय अधिकारी, जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड	सदस्य;
(v)	प्रभागीय वनाधिकारी, शुपियां	सदस्य;
(vi)	वन्यजीव वार्डन, शुपियां	सदस्य- सचिव;
(vii)	राज्य जैव विविधता बोर्ड के एक विशेषज्ञ	सदस्य।

6. विचारार्थ विषय.- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या संघ राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनर्गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति संघ राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

(3) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले और भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में शामिल क्रियाकलापों की इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों को छोड़कर वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उन्हें उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को भेजा जाएगा।

(4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों को छोड़कर, भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में शामिल न किए गए परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले क्रियाकलापों की वास्तविक स्थल- विशिष्ट दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उन्हें संबंधित विनियामक प्राधिकरणों को भेजा जाएगा।

- (5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबंधित उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन शिकायत दर्ज करने के लिए सक्षम होगा।
- (6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।
- (7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्यवाही रिपोर्ट संघ राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, **उपाबंध V** में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।
- (8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।
7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार और संघ राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।
8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अधीन होंगे।

[फा. सं. 25/06/2019-ईएसजेड]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

उपाबंध-I**क. जम्मू और कश्मीर में हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य की सीमा का विवरण**

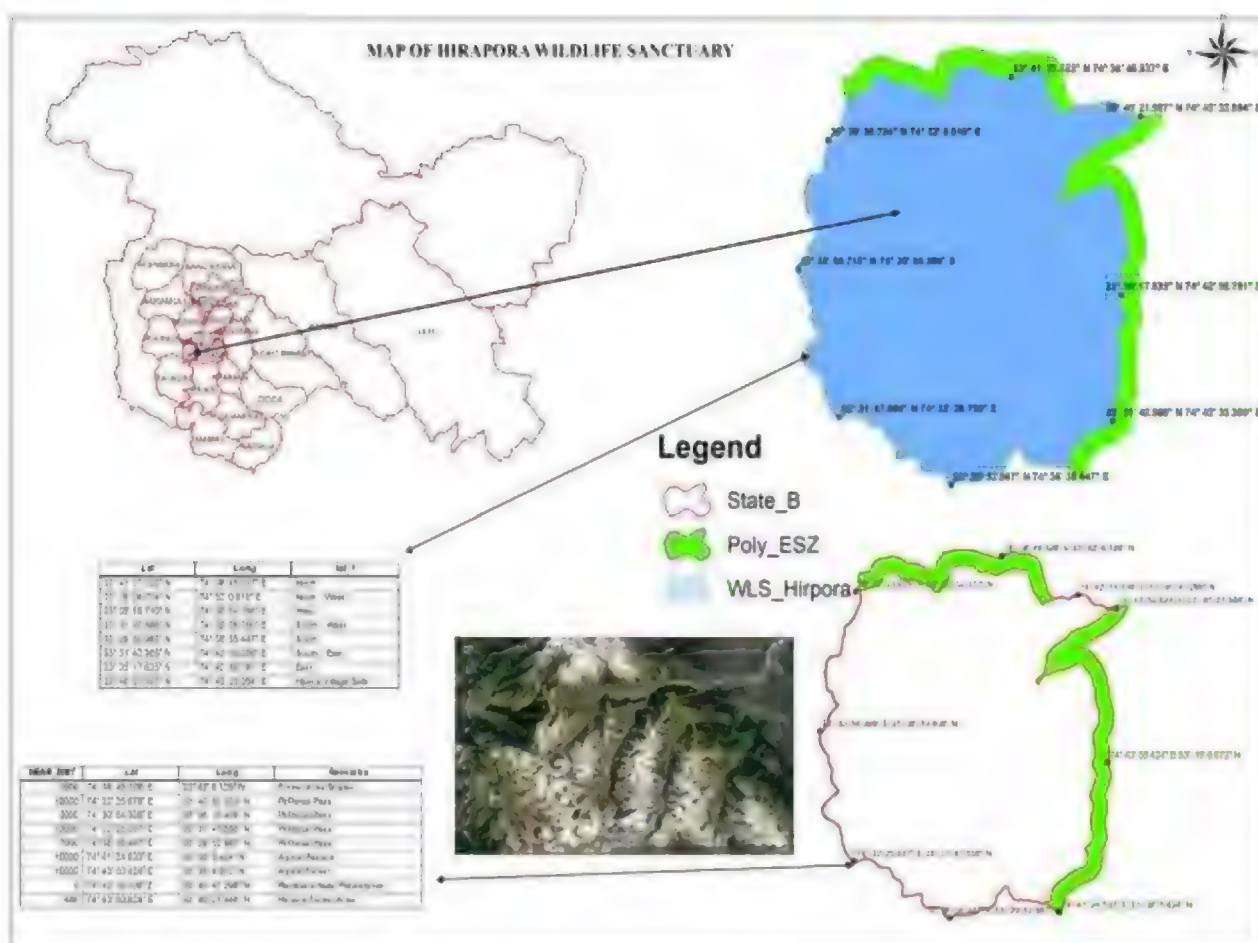
उत्तर:	छतापानी को नेझो, गुमसर, खपाथरी, पाटनडोबन
दक्षिण:	भाग सर गली, रूपरी गली, बुदिल पीर पास, परासिंग
पूर्व:	गुरवतन, प्रिशी
पश्चिम:	धोलीमर्ग, पीरपंजल पास, नंदन सार, कटोरी सार

क. हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

दिशा	सीमा विवरण	अक्षांश (उ)	देशांतर (पू)
उत्तर	वन क्षेत्र शिपकोर	उ 33° 42' 6.128"	पू 74° 38' 49.328"
उत्तर-पूर्व	रामबियारा नाला, पाटनदियरान	उ 33° 40' 47.298"	पू 74° 42' 10.108"
पूर्व	अल्पाइन वन	उ 33° 35' 9.572"	पू 74° 43' 30.424"
दक्षिण-पूर्व	अल्पाइन चारागाह	उ 33° 30' 5.424"	पू 74° 41' 24.533"
दक्षिण	पीरपंजल पास	उ 33° 29' 52.987"	पू 74° 36' 35.447"
दक्षिण-पश्चिम	पीरपंजल पास	उ 33° 31' 47.550"	पू 74° 32' 25.037"
पश्चिम	पीरपंजल पास	उ 33° 36' 10.408"	पू 74° 30' 54.308"
उत्तर-पश्चिम	रामबियारा नाला, पाटनदियरान	उ 33° 40' 52.373"	पू 74° 32' 25.679"

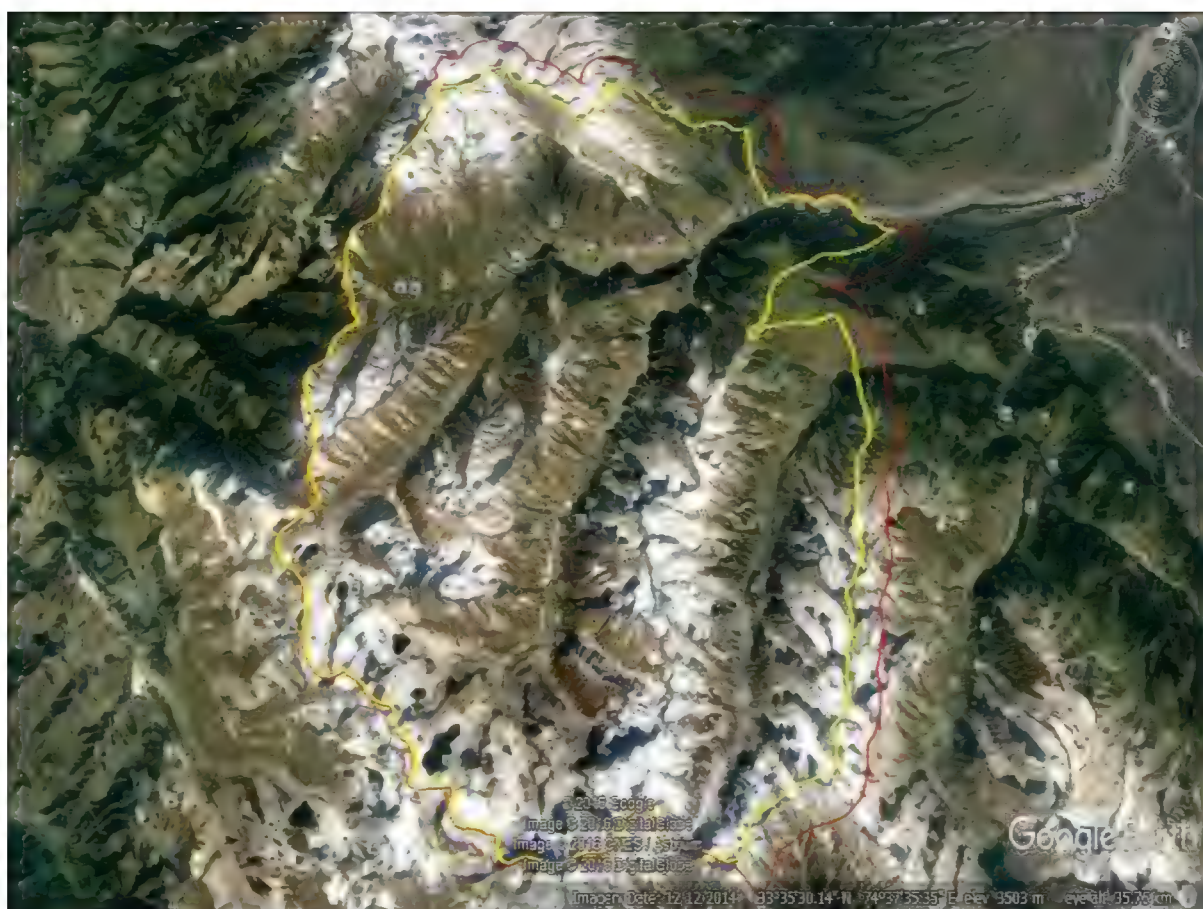
उपाबंध- IIक

प्रमुख अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का अवस्थान मानचित्र



उपाबंध- IIख

प्रमुख अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल मानचित्र



उपाबंध-IIग

भारतीय सर्वेक्षण (एस ओ आई) टोपोशीट पर मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



उपाबंध-III

सारणी क: हिरपोरा वन्यजीव अभयारण्य के प्रमुख अवस्थानों के भू-निर्देशांक

क्र. सं.	प्रमुख बिंदुओं की पहचान	प्रमुख बिंदुओं का अवस्थान / दिशा	अक्षांश (उ)	देशांतर (पू)
01	वन क्षेत्र शिपकोर	उत्तर	उ 33° 41' 27.322"	पू 74° 38' 45.527"
02	पीर पंजल पास	पश्चिम	उ 33° 35' 58.710"	पू 74° 30' 54.396"
03	पीर पंजल पास	दक्षिण	उ 33° 29' 52.987"	पू 74° 36' 35.447"
04	अल्पाइन वन	पूर्व	उ 33° 35' 17.635"	पू 74° 42' 50.781"

एच	अक्षांश (उ)	देशांतर (पू)	दिशा	स्थान
एच1	33° 41' 27.322" उ	74° 38' 45.537" पू	उत्तर	रेज पीरपंजल पास
एच7	33° 39' 38.724" उ	74° 32' 0.616" पू	उत्तर-पश्चिम	रेज धेलीमर्ग
एच6	33° 35' 58.710" उ	74° 30' 54.396" पू	पश्चिम	रेज
एच5	33° 31' 47.886" उ	74° 32' 26.750" पू	दक्षिण-पश्चिम	रेज लखसुख सार के निकट
एच5	33° 29' 52.987" उ	74° 36' 35.447" पू	दक्षिण	रेज रुपरी गली
एच4	33° 31' 42.969" उ	74° 42' 33.200" पू	दक्षिण-पूर्व	रेज परासिंग
एच3	33° 35' 17.635" उ	74° 42' 50.781" पू	पूर्व	रेज
एच2	33° 40' 21.507" उ	74° 43' 33.054" पू	उत्तरपूर्व	दुबन रोड

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रमुख अवस्थानों के भू-निर्देशांक

क्र. सं.	प्रमुख बिंदुओं की पहचान	प्रमुख बिंदुओं का अवस्थान / दिशा	संरक्षित क्षेत्र की सीमा से दूरी (किलोमीटर में)	अक्षांश (उ)	देशांतर (पू)
01	वन क्षेत्र शिपकोर	उत्तर	01	उ 33° 42' 6.128"	पू 74° 38' 49.328"
02	पीर पंजल पास	उत्तर-पश्चिम	01	उ 33° 40' 52.373"	पू 74° 32' 25.679"
03	पीर पंजल पास	पश्चिम	0.03	उ 33° 36' 10.408"	पू 74° 30' 54.308"
04	पीर पंजल पास	दक्षिण-पश्चिम	00	उ 33° 31' 47.550"	पू 74° 32' 25.037"
05	पीर पंजल पास	दक्षिण	00	उ 33° 29' 52.987"	पू 74° 36' 35.447"
06	अल्पाइन चारागाह	दक्षिण-पूर्व	01	उ 33° 30' 5.424"	पू 74° 41' 24.533"
07	अल्पाइन वन	पूर्व	01	उ 33° 35' 9.572"	पू 74° 43' 30.424"
08	रामबियारा नाला, पाटनदियरान	उत्तर-पूर्व	00	उ 33° 40' 47.298"	पू 74° 42' 10.108"

निकट दूरी	अक्षांश	देशांतर	दिशा	निकट_एफआईडी	टिप्पणियां
1000	74° 38' 49.328" पू	33° 42' 6.128" उ	उत्तर	1	वन क्षेत्र शिपकोर,
1000	74° 32' 25.679" पू	33° 40' 52.373" उ	उत्तर-पश्चिम	10	पीरपंजल पास
30	74° 30' 54.308" पू	33° 36' 10.408" उ	पश्चिम	9	पीरपंजल पास
0	74° 32' 25.037" पू	33° 31' 47.550" उ	दक्षिण-पश्चिम	8	पीरपंजल पास
0	74° 36' 35.447" पू	33° 29' 52.987" उ	दक्षिण	7	पीरपंजल पास
1000	74° 41' 24.533" पू	33° 30' 5.424" उ	दक्षिण-पूर्व	6	अल्पाइन चरागाह
1000	74° 43' 30.424" पू	33° 35' 9.572" उ	पूर्व	4	अल्पाइन वन
0	74° 42' 10.108" पू	33° 40' 47.298" उ	नाला की तरफ	2	रामबियारा नाला, पाटनदियरान
400	74° 43' 50.824" पू	33° 40' 21.546" उ	हिरपोरा ग्राम की तरफ	3	हिरपोरा वन क्षेत्र

उपाबंध-IV**की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रपत्र:**

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत्त : (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में प्रस्तुत करें) ।
3. पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति ।
4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार(पारिस्थितिकी-संवेदी जोन वार) । विवरण उपाबंध के रूप में संलग्न करें।
5. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार।(विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें)।
6. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । (विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें)।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE

NOTIFICATION

New Delhi, the 9th June, 2020

S.O. 1874(E).—The following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at esz-mef@nic.in

Draft Notification

WHEREAS, Hirpora Wildlife Sanctuary lies between 33°30' & 33°42' North latitude and 74°33' & 74°43' East longitude located about 70 kilometers South of Srinagar city. Hirpora Wildlife Sanctuary gets its name from the Village Hirpora, a small hamlet that lies on the northeastern out skirts of the protected area and forms its gateway. The Sanctuary spread over the undulating terrain of the Pir Panjal Mountains encompasses an area of around 341.25 square kilometers. The Sanctuary falls in the Shopian District of the Kashmir Valley with the District Headquarter at a distance of 12 kilometers. The nearest airport, Srinagar is 70 kilometers and the nearest railhead, Kakpora is 40 kilometers away;

AND WHEREAS, the Sanctuary came into existence through Government notification No. FST/WL/San/Hirpora/87 (SRO-153), dated 19th March, 1987. While framing the organizational set up of the Department of Wildlife Protection, the Government of Jammu & Kashmir *vide* its order No 128-F.S.T of 1991 dated 13th of May 1991, again notified the establishment of Hirpora Wildlife Sanctuary. Later, the government through a notification issued under SRO 424, and endorsed under No. FST/WL/71/2007, dated 18th of December 2007, extended the area of the sanctuary to 341.25 square kilometers;

AND WHEREAS, the mountains range encompassing the Hirpora Wildlife Sanctuary are a part of the Pirpanjal Range. The topography is mountainous with slopes of moderate to steep gradient broken by rocky cliffs. The western and southern sides are steep while as the eastern mountainous ridge is more gentle to moderate slope. The terrain is undulated, criss-crossed by gullies and numerous smaller mountain drains or *nars*. The altitude varies from 2557 to 4745 meters above sea level;

AND WHEREAS, Hirpora Wildlife Sanctuary has different types of vegetation which formed under the influence and control of various physical and biological factors like altitude, aspect, habitat conditions and above all biotic interference. The dominating broad-leaved plant species in the riverine (below 2300m) zone are *Asculus indica* and *Juglans regia* associated with *Morus alba*, *Robinia pseudoacacia*, *Rhus succedanea*, *Celtis australis*, *Ulmus villosa*, *Populus ciliata*, *Salix caprea*, etc. The dominating shrubs are *Viburnum continifolium*, *Berberis lyceum*, *Parrotiopsis jacquemontiana*, *Sorbaria tomentosa*, etc. The sliver fir and blue pine forests are the dominating sub-alpine (2300m-3000m) vegetation. The dominant species includes *Pinus griffithi* associated with *Rosa brunonii*, *Abies pindrow*, *Betula utilis*, *Picea smithiana* and *Ulmus walliciana*, etc. Other dominants shrub species include *Indigofera heterantha*, *Taxus walliciana* and *Isodo nruugosus*, etc. The alpine scrub lands was dominated by Birch, *Betula utilis*, associated with *Rhododendron companulatum* and *Juniperus* spp. and the alpine pastures is dominated by *Fritillaria* spp. and *Polygonum* spp. Etc. The alpine (3000-3500m) vegetation is dominated by Birch, *Betula utilis*, associated with *Rhododendron companulatum* & *Juniperus* spp. and the alpine pastures, dominated by *Fritillaria* spp. & *Polygonum* spp. The ground cover comprises of the dicotyledonous herbs like *Rumex patientia*, *Corydalis* spp. *Primula* spp, *Pedicularis* spp, *Anemone* spp. etc. Rock faces (above 3500m) the rocky cliffs and hill tops are dominated by dwarf evergreen shrubs including *Juniperus recurva*, *Rhododendron anthopogon* etc. associated with herbs, *Stachys sericea*, *Geum elatum* and *Veronica melissaefolia*, etc;

AND WHEREAS the Hirpora forests also blessed with numerous plant species of great medicinal value. Some medicinal plants growing in the area include *Aconitum heterophyllum*, *Arnebia benthamii*, *Artemisia absinthium*, *Berberis lyceum*, *Bergenia ciliata*, *Datura stramonium*, *Dioscorea deltoidea*, *Lavatera cashmeriana*, *Saussurea costus* and *Taxus walliciana*;

AND WHEREAS, Hirpora Wildlife Sanctuary has vast vegetative covers which provides an ideal habitat for mammal and other faunal species. The dominating mammals recorded from the Sanctuary are Kashmir markhor, (*Capra falconeri*), Himalayan musk deer (*Moschus Cupreus*), Asiatic black bear (*Ursus thibetanus*), Himalayan brown bear (*Ursus arctos*), common leopard (*Panthera pardus*), common langur (*Semnopithecus entellus*), Rhesus

macaque (*Macaca mulatta*), leopard cat (*Prionailurus bengalensis*), jungle cat (*Felis chaus*), yellow-throated marten, (*Martes flavigula*), Himalayan palm civet (*Paguma larvata*), Tibetan wolf (*Canis himalayensis*), etc;

AND WHEREAS, the Hirpora Wildlife Sanctuary is home for many migratory and residents birds including species of vultures, raptors and passerines. The dominant species found in the Sanctuary are black eared kite (*Milvus migrans*), Himalayan griffon vulture (*Gyps himalayensis*), Egyptian vulture (*Neophron percnopterus*), bearded vulture (*Gypaetus barbatus*), Eurasian griffon (*Gyps fulvus*), monal pheasant (*Lophophorus impejanus*), Himalayan snow cock (*Tetra gallus himalayensis*), chukar partridge (*Alectoris chakur*), Koklas pheasant (*Pucrsia macrolopha*), blue rock pigeon (*Columba livia*), Oriental turtle dove (*Streptopelia orientalis*), Eurasian collared dove (*S. decaota*), Eurasian cuckoo (*Cuculus canorus telephones*), the alpine swift (*Apus melba melba*), European roller (*Croci asgasrullus semenwi*), common hoopoe (*Upopa epops epops*), Kashmir flycatcher (*Ficidula subrubra*), streaked laughing thrush (*Trocr alopterum linnactum*), rock bunting (*Emberiza cia*), etc;

AND WHEREAS, the Sanctuary also provides habitat for the some rare, endangered and threatened species like markhor (near threatened), Kashmir musk deer (endangered), common leopard (vulnerable), Himalayan griffon vulture (near threatened), bearded vulture (near threatened), Kashmir flycatcher (vulnerable). Therefore, the Sanctuary is rich in ecologically and biodiversity perspective;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Hirpora Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from 0 (zero) to 1.0 kilometre around the boundary of Hirpora Wildlife Sanctuary, in Shopian district in Jammu and Kashmir as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

- 1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.** – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of 0 (zero) to 1.0 kilometre around the boundary of Hirpora Wildlife Sanctuary and the area of the Eco-sensitive Zone is 44.90 square kilometres. The extent of Eco-sensitive Zone at different direction are given below:

Direction	Extent (kilometers)
North	01
North-East	00
East	01
South-East	01
South	00
South-West	00
West	0.03
North-west	01

Justification for zero extent of Eco-sensitive Zone: Hirpora Wildlife Sanctuary falls in the administrative jurisdiction of Kashmir province and is surrounded by territorial forests of Shopian Forest Division, falling in the same province and Rajouri Forest Division falling in Jammu Province. Proposed Eco-sensitive Zone around Hirpora Wildlife Sanctuary has been identified in Shopian Forest Division which varies from 0 to 1000 meters and is shown in the map annexed herewith. The Eco-sensitive Zone of Hirpora Wildlife Sanctuary towards north-eastern (Hirpora village) boundary has been kept zero, as this stretch of area falls on the fringe of Hirpora village and touches the inter-provincial (Jammu province and Kashmir province) boundary.

- (2) The boundary description of Hirpora Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I**.
- (3) The maps of the Hirpora Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA**, **Annexure-IIB**, **Annexure-IIC** and **Annexure-IID**.
- (4) List of geo-coordinates of the boundary of Hirpora Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table A and Table B of **Annexure III**.

- (5) There were no villages falling in the proposed Eco-sensitive Zone.
- 2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.-** (1) The union territory shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the competent authority of union territory.
- (2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the Union territory Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and Union territory laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
- (3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the Union territory Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-
- (i) Environment;
 - (ii) Forest and Wildlife;
 - (iii) Agriculture;
 - (iv) Revenue;
 - (v) Urban Development;
 - (vi) Tourism;
 - (vii) Rural Development;
 - (viii) Irrigation and Flood Control;
 - (ix) Pollution Control Board;
 - (x) Municipal;
 - (xi) Panchayati Raj; and
 - (xii) Public Works Department.
- (4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
- (5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.
- (6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.
- (7) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.
- (8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
- (9) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.
- 3. Measures to be taken by the Union territory Government.-** The Union territory Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-
- (1) **Land use.-** (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purpose other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or Union territory Government as applicable and *vide* provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:-

- (i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;

- (ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
- (iii) small scale industries not causing pollution;
- (iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
- (v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the Union territory Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the Union territory Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

(b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

(2) **Natural water bodies.**—The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the Union territory Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) **Tourism or Eco-tourism.**— (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

(b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the Union territory Department of Tourism in consultation with Union territory Departments of Environment and Forests.

(c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.

(d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.

(e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:—

- (i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

- (ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

- (iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

(4) **Natural heritage.**— All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.

- (5) **Man-made heritage sites.-** Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.
- (6) **Noise pollution.-** Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.
- (7) **Air pollution.-** Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.
- (8) **Discharge of effluents.-** Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by Union territory Government whichever is more stringent.
- (9) **Solid wastes.-** Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-
 - (a) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;
 - (b) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.
- (10) **Bio-Medical Waste.-** Bio Medical Waste Management shall be as under:-
 - (a) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management, Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R 343 (E), dated the 28th March, 2016.
 - (b) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.
- (11) **Plastic waste management.-** The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.
- (12) **Construction and demolition waste management.-** The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.
- (13) **E-waste.-** The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.
- (14) **Vehicular traffic.-** The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the Union territory Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.
- (15) **Vehicular pollution.-** Prevention and control of vehicular pollution shall be in compliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.
- (16) **Industrial units.-** (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.

- (ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.

(17) Protection of hill slopes.- The protection of hill slopes shall be as under:-

- (a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;
- (b) construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall not be permitted.

- 4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.-** All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
A. Prohibited Activities		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for manufacture of country tiles or bricks for housing and for personal consumption;
		(b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4 th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21 st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted: Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
8.	Use of polythene bags.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
9.	Commercial use of firewood.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
B. Regulated Activities		
10.	Commercial establishment of hotels and resorts.	<p>No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities:</p> <p>Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.</p>
11.	Construction activities.	<p>(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:</p> <p>Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents.</p> <p>Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
12.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
13.	Air and vehicular pollution.	Regulated as per the applicable laws.
14.	Felling of trees.	<p>(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the Competent Authority in the Union territory Government.</p> <p>(b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or Union territory Act and the rules made thereunder.</p>
15.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
16.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).

S. No.	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
17.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulations available guidelines.
18.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
19.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
20.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
21.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
22.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
23.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.
24.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
25.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
26.	Solid waste management.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
29.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
C. Promoted Activities		
30.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
31.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
32.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
33.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
34.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
35.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
36.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.
37.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
38.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
39.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
40.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.

- 5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.-** For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:-

Sl. No.	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	Collector or Deputy Commissioner, Shopian	Chairman, ex officio
(ii)	An expert in the area of ecology and environment to be nominated by the Government of Jammu and Kashmir for a period of one year	Member;
(iii)	A representative of Non-governmental Organisation working in the field of wildlife conservation to be nominated by the Union territory Government	Member;
(iv)	Regional Officer, Jammu and Kashmir Union territory Pollution Control Board	Member;
(v)	Divisional Forest Officer, Shopian	Member;
(vi)	Wildlife Warden, Shopian	Member;
(vii)	One expert from State Biodiversity Board	Member-Secretary.

- 6. Terms of reference.** – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

- (2) The tenure of the Monitoring committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the Union territory Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the Union territory Government.
- (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under **paragraph 4** thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
- (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
- (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.
- (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
- (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the Union territory as per proforma appended at **Annexure IV**.
- (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. The Central Government and Union territory Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/06/2019-ESZ]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

ANNEXURE-I

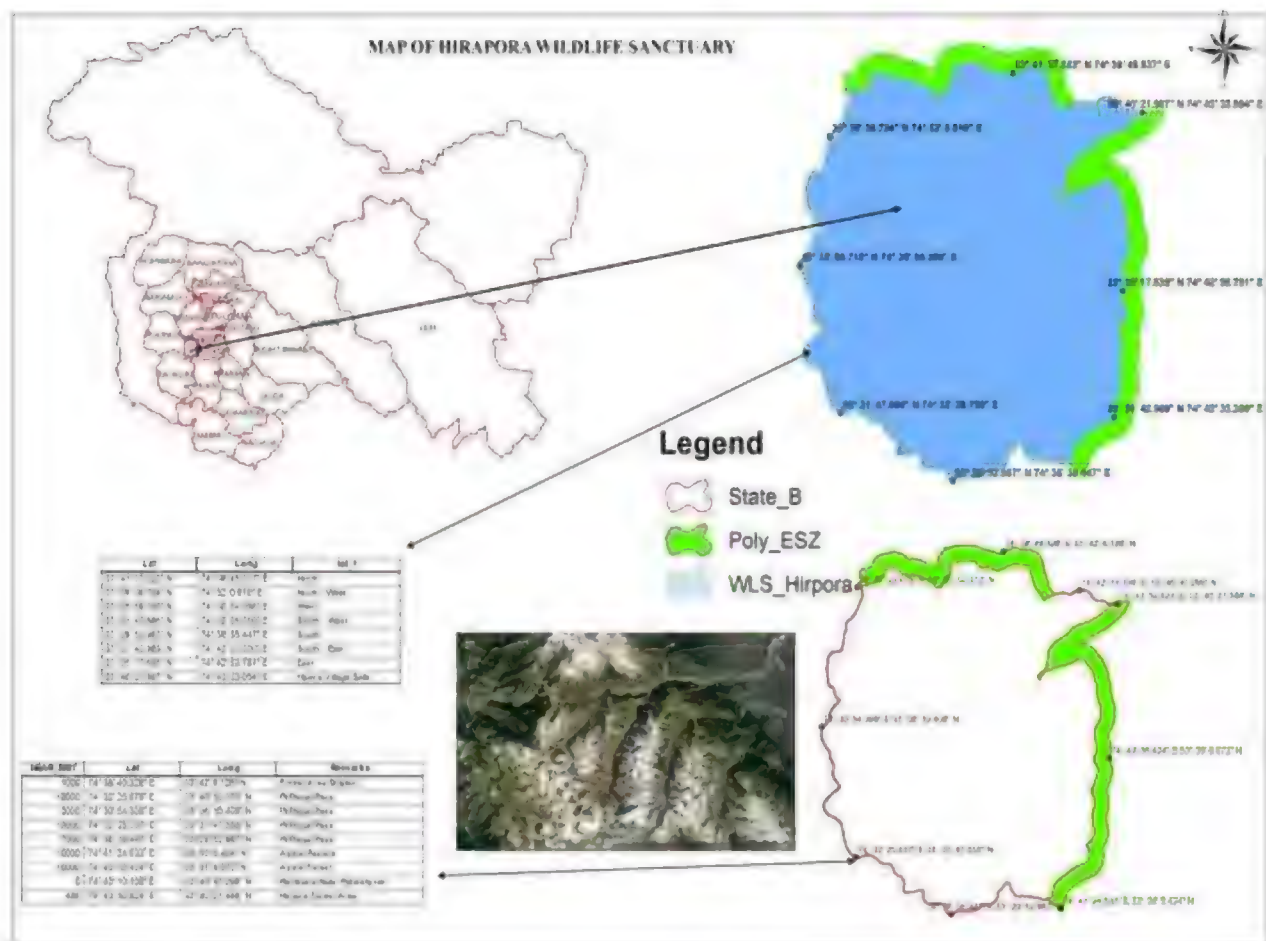
A. BOUNDARY DESCRIPTION OF HIRPORA WILDLIFE SANCTUARY IN JAMMU AND KASHMIR

North: Chhatapani Ko Nezo, Gumsar, Khapathri, Patandoban
 South: Bhag Sar Gali, Rupri Gali, Budil Pir Pass, Parasing
 East: Gurwatan, Prishi
 West: Dholimarg, PirPanjal Pass, Nandan Sar, Katori Sar

**A. BOUNDARY DESCRIPTION OF ECOSENSITIVE ZONE AROUND HIRPORA WILDLIFE
 SANCTUARY**

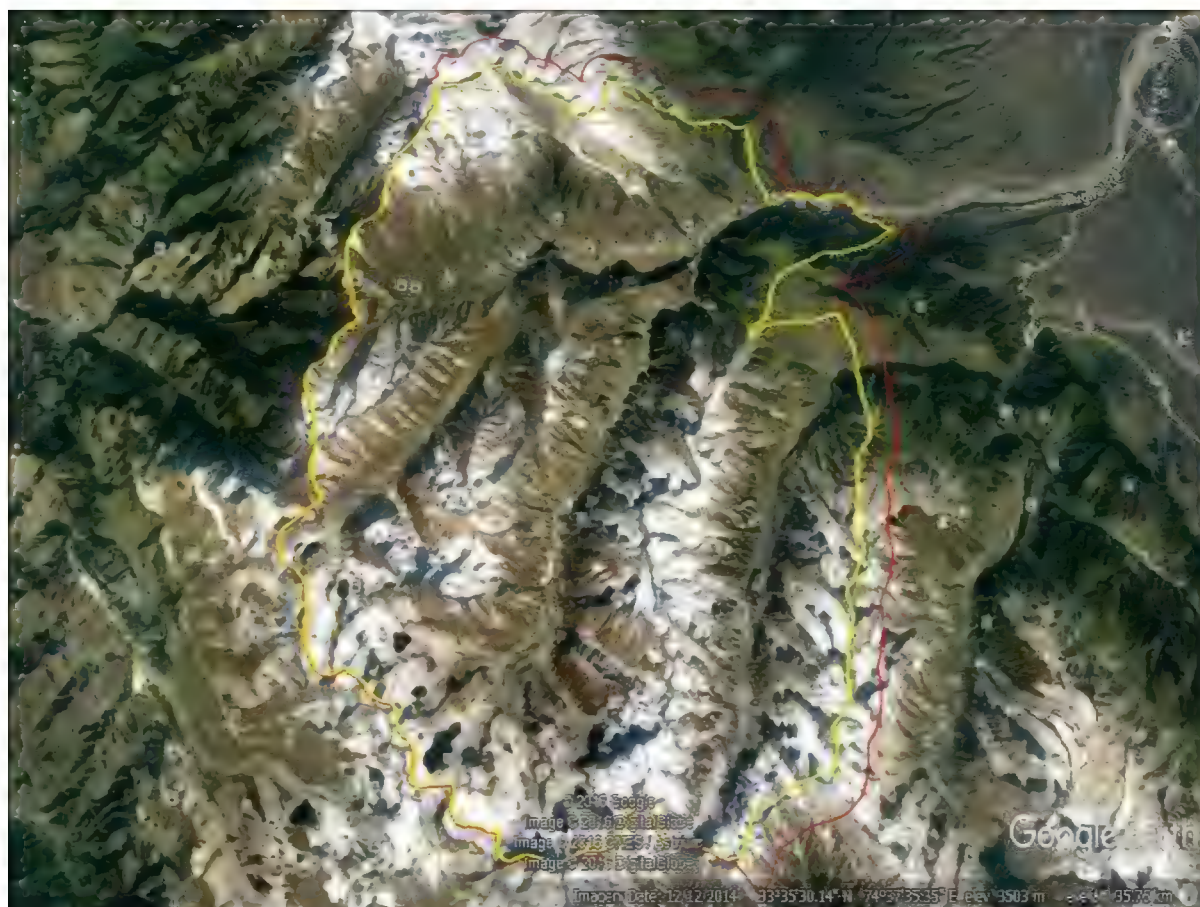
Direction	Boundary Description	Latitude (N)	Longitude (E)
North	Forest Area Shipkor	N 33° 42' 6.128"	E 74° 38' 49.328"
North-East	Rambiara Nallah, Patandiyran	N 33° 40' 47.298"	E 74° 42' 10.108"
East	Alpine Forest	N 33° 35' 9.572"	E 74° 43' 30.424"
South-East	Alpine pasture	N 33° 30' 5.424"	E 74° 41' 24.533"
South	Pir Panjal Pass	N 33° 29' 52.987"	E 74° 36' 35.447"
South-West	Pir Panjal Pass	N 33° 31' 47.550"	E 74° 32' 25.037"
West	Pir Panjal Pass	N 33° 36' 10.408"	E 74° 30' 54.308"
North-West	Rembiara Nala, Patandiyran	N 33° 40' 52.373"	E 74° 32' 25.679"

**LOCATION MAP OF HIRPORA WILDLIFE SANCTUARY AND ITS ECO-SENSITIVE ZONE ALONG
WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**



ANNEXURE- IIB

**GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF HIRPORA WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH
LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**

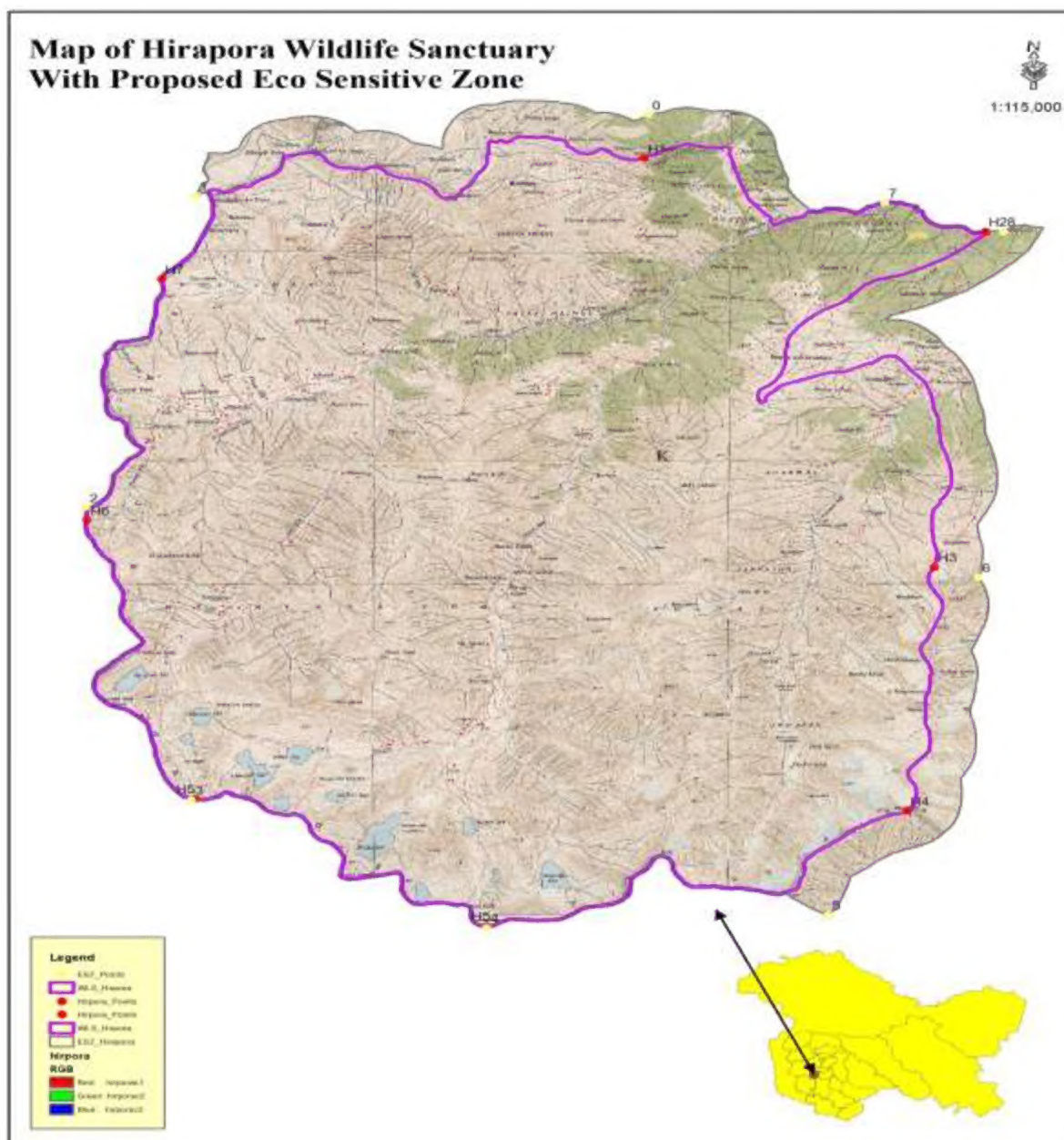


**MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF HIRPORA WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE
AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS ON SURVEY OF INDIA (SOI) TOPOSHEET**



ANNEXURE- IID

MAP SHOWING LANDUSE PATTERN OF ECO-SENSITIVE ZONE OF HIRPORA WILDLIFE
SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



ANNEXURE-III

**TABLE A: GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF HIRPORA WILDLIFE
SANCTUARY**

S. No	Identification of Prominent Points	Location/ Direction of Prominent Points	Latitude (N)	Longitude (E)
01	Forest Area Shipkor	North	N 33° 41' 27.322''	E 74° 38' 45.527''
02	Pir Panjal Pass	West	N 33° 35' 58.710''	E 74° 30' 54.396''
03	Pir Panjal Pass	South	N 33° 29' 52.987''	E 74° 36' 35.447''
04	Alpine Forest	East	N 33° 35' 17.635''	E 74° 42' 50.781''

Name	Latitude	Longitude	Direction	Remarks
H1	33° 41' 27.322" N	74° 38' 45.537" E	North	Redge Pirpanjal Pass
H7	33° 39' 38.724" N	74° 32' 0.616" E	North - West	Redge Dhelimerg
H6	33° 35' 58.710" N	74° 30' 54.396" E	West	Redge
H5	33° 31' 47.886" N	74° 32' 26.750" E	South - West	Redge near Laksukh Sar
H5	33° 29' 52.987" N	74° 36' 35.447" E	South	Redge Rupri Gali
H4	33° 31' 42.969" N	74° 42' 33.200" E	South - East	Redge Parasing
H3	33° 35' 17.635" N	74° 42' 50.781" E	East	Redge
H2	33° 40' 21.507" N	74° 43' 33.054" E	Northeast	Duban Road

TABLE B: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

S. No	Identification of Prominent Points	Location /Direction of Prominent Points	Distance from PA Boundary (in kms)	Latitude (N)	Longitude (E)
01	Forest Area Shipkor	North	01	N 33° 42' 6.128''	E 74° 38' 49.328''
02	Pir Panjal Pass	North-West	01	N 33° 40' 52.373''	E 74° 32' 25.679''
03	Pir Panjal Pass	West	0.03	N 33° 36' 10.408''	E 74° 30' 54.308''
04	Pir Panjal Pass	South-West	00	N 33° 31' 47.550''	E 74° 32' 25.037''
05	Pir Panjal Pass	South	00	N 33° 29' 52.987''	E 74° 36' 35.447''
06	Alpine Pasture	South-East	01	N 33° 30' 5.424''	E 74° 41' 24.533''
07	Alpine Forest	East	01	N 33° 35' 9.572''	E 74° 43' 30.424''
08	Rembiara Nala, Patandiyran	North-East	00	N 33° 40' 47.298''	E 74° 42' 10.108''

Near Distance	Latitude	Longitude	Direction	Near_FID	Remarks
1000	74° 38' 49.328" E	33° 42' 6.128" N	North	1	Forest Area Shipkor,
1000	74° 32' 25.679" E	33° 40' 52.373" N	North - West	10	PirPanjal Pass
30	74° 30' 54.308" E	33° 36' 10.408" N	West	9	PirPanjal Pass
0	74° 32' 25.037" E	33° 31' 47.550" N	South - West	8	PirPanjal Pass
0	74° 36' 35.447" E	33° 29' 52.987" N	South	7	PirPanjal Pass
1000	74° 41' 24.533" E	33° 30' 5.424" N	South - East	6	Alpine Pasture
1000	74° 43' 30.424" E	33° 35' 9.572" N	East	4	Alpine Forest
0	74° 42' 10.108" E	33° 40' 47.298" N	Nallah Side	2	Rembiara Nala, Patandiyran
400	74° 43' 50.824" E	33° 40' 21.546" N	Hipora Village Side	3	Hirpora Forest Area

ANNEXURE-IV

Performa of Action Taken Report:

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.